International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 70-73

साहित्य के मायने

सुश्री अन्नू इंदौरा*

प्रस्तावना

आदिकाल से मानव अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का प्रयास करता रहा है। दैनदिन आवश्यकताओं के अतिरिक्त मानव हृदय की यह सहज आकांक्षा भी रही है कि वह अपने भीतर उठने वाले भावों तथा विचारों को दूसरों तक प्रेषित करें। इसी क्रम में मनुष्य अपने मन के भावों और विचारों को भाषिक प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त करता रहा है मनुष्य अपने समाज संस्कृति से भाषा से ही तो जुड़ता हैं। इन्हीं भावों और विचारों की सशक्त और परिपक्व अभिव्यक्ति का माध्यम साहित्य है। प्रश्न उठता है कि साहित्य क्या है, इसे कैसे समझा जा सकता है, क्या इसकी कोई निश्चित परिभाषा दी जा सकती हैं या यह समयानुसार बदलने वाली अवधारणा का नाम है... वास्तव में साहित्य विचार, विश्वास, मूल्यों, भाषा, और संस्कृति का संवाहक है। ज्ञान के विभिन्न स्रोतों के सम्यक संकलन का नाम साहित्य है इसलिए साहित्य को उपलब्ध विपुल ज्ञान संपदा से संवाद कर सकने का माध्यम भी माना जाता है। मानव जीवन में ऐतिहासिक परिवर्तनों की कड़ी हमें इतिहास से इतर प्रमाणिक रूप से साहित्य से ही मिलती हैं। कहा भी जाता है कि इतिहास में तिथियों के अतिरिक्त सब कुछ झूठ होता है और साहित्य में तिथियों के अतिरिक्त सब कुछ सत्य। इस प्रकार हम देखते हैं कि साहित्य ज्ञात और अज्ञात के बीच, तथ्य और कल्पित के बीच, वास्तविक और कल्पना के बीच सेतु का काम करता है। साहित्य के विषय में एक प्रसिद्ध उक्ति है कि साहित्य समाज का दर्पण है। इसका अर्थ है कि सामाजिक बदलाव साहित्यिक सवालों को बुनियादी तौर से प्रभावित करते हैं। इसी के साथ साहित्य न केवल दर्पण है जिसमें मनुष्य खुद का प्रतिबिम्ब देखकर स्वयं पर अनुचिंतन कर सकता है बल्कि साहित्य वह खिड़की भी है जिससे मनुष्य अपने आसपास के संसार को अन्वेषित कर सकता हैं इसलिए साहित्य को व्यक्तित्व के विकास का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है।

साहित्य के विषय में विभिन्न विद्वानों के मत

- **मैथ्यू आर्नल्ड** के अनुसार साहित्य जीवन की आलोचना है।
- **डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी** के अनुसार मनुष्यों का अनवरत प्रयास ही संसार का साहित्य है। साहित्य की सृष्टि तभी हो जाती है जब बाह्य प्रकृति से साहचर्य स्थापित होने के साथ ही मनुष्यों के हृदय में भिन्न–भिन्न भावनाएं उत्पन्न होने लगती हैं।
- **बालकृष्ण भट्ट** के अनुसार साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** के अनुसार साहित्य जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब है।
- **कवि जयशंकर प्रसाद** के अनुसार साहित्य में जीवन की अभिव्यक्ति यथार्थवाद और अभावों की पूर्ति आदर्शवाद के रूप में होती है।
- **प्रेमचंद** के अनुसार साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सचाई प्रकट की गयी हो।
- **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन** के अनुसार साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है परन्तु एक नया वातावरण देना भी है।
- **लीलाधर मंडलोई** के अनुसार साहित्य इंसान के दुखों का रोजनामचा है।

* सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर 14, गुरुग्राम।

इस प्रकार कह सकते हैं कि साहित्य वह लिखित सामग्री है जिसमें लोकहित की भावना का समावेश होता है और जिसके द्वारा उच्च नैतिक एवं कल्याणकारी जीवन मूल्यों की स्थापना की जाती है। साहित्य हमारी संवेदना का विकास करता है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद आदि लेखकों का साहित्य इसी बात को प्रमाणित करता है। कहा भी गया है कि साहित्य के अध्ययन से हम थोड़ा ज्यादा मनुष्य बनते हैं। वास्तव में जीवन की सम्पूर्ण विवेचना ही साहित्य है। साहित्य का उद्देश्य जीवन के प्रति आस्था, विश्वास तथा आशा उत्पन्न करना है। साहित्य का उद्देश्य जीवन की सम्पूर्णता को व्यक्त करना है। इसलिए समाज का उजला और सया पक्ष दोनों साहित्य के दायरे में आते हैं। सवाल उठता है कि क्या एक साहित्यकार सारी दुनिया के यथार्थ का चित्र अपने साहित्य में खिंच सकता है तो इसके लिए कहा जा सकता है कि वह ऐसा चाहे न भी कर सके किन्तु फिर भी अपनी सीमा में बहुत कुछ कर सकता है क्योंकि विचार के स्तर पर साहित्य के माध्यम से साहित्यकार हमारे सामने एक समान्तर दुनिया का आदर्श खड़ा करता है। इस प्रकार साहित्य एक साथ दो भूमिकाओं में होता है एक, मार्गदर्शक की भूमिका में और दूसरे, आदर्श की स्थापना करने वाले की भूमिका में। इस प्रकार साहित्य की पूर्णता के लिए यथार्थवाद और आदर्शवाद दोनों का समन्वित रूप आवश्यक है। साहित्य की परिभाषा देते हुए कहा जाता है कि **स हितकर इति साहित्यः** अर्थात् जो हितकर है, वही साहित्य है। वास्तव में साहित्य की उपादेयता इसी बात पर निर्भर करती है कि वह समाज के लिए कितना हितकारी है। इसी आधार पर साहित्य दो प्रकार का होता हैं एक भावात्मक साहित्य और दूसरा ज्ञानात्मक साहित्य।

हिंदी साहित्य के ग्यारहों वर्षों के साहित्य के विभिन्न नाम इसी बात को संकेतित करते हैं कि साहित्य की दिशा सदैव परिवर्तनशील होती है। साहित्य सामाजिक आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, रुचियों से सम्बन्ध रखता है जो समय समय पर बदलती रहती हैं। साहित्य अपने समय की उपज होता है उसमें अपने समय के सवाल, विभिन्न मुद्दे और सामाजिक संघर्ष मौजूद होते हैं। हमारे यहाँ वीरतापूर्ण, भक्तिपरक, श्रृंगारपरक, देशभक्ति, स्वाभिमान एवं वीरता की गाथाओं एवं भावनाओं से परिपूर्ण साहित्य की मौजूदगी इस बात को प्रमाणित करती है कि हमारा अतीत अनेक संघर्षों और समस्याओं से घिरा हुआ था।

साहित्य की ऐतिहासिक भूमिका

- परतंत्रता के काल में सम्पूर्ण भारत को जोड़ने के लिए साहित्य ने सशक्त साधन का काम किया। भारतेंदु, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि राष्ट्रवादी साहित्यकारों का साहित्य इसी बात को प्रमाणित करता है कि साहित्य सामाजिक बदलाव का माध्यम रहा है जिसने भारतीय जनता की चेतना को साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय संदर्भों से जोड़ने का कार्य किया।
- अतीत में भारतीय समाज को तमाम तरह के अन्धविश्वासों, रूढियों, आडम्बरों से निकालकर सामाजिक पुनरुत्थान के लिए साहित्य का सहारा लिया गया। भक्तिकालीन साहित्य और आधुनिक काल में भारतेंदु काल से लेकर प्रगतिकाल तक के साहित्य का इसमें विशेष योगदान रहा है। इस समय के साहित्य को पढ़कर हमें पता चलता है कि साहित्य विचार के लिए प्रेरित करता है। साहित्य समाज का मार्गदर्शन करने के साथ परिवर्तन की दिशा भी निर्धारित करता है और सामूहिक बदलाव के लिए प्रेरणा भी देता है।
- साहित्य का मुख्य धर्म समाज में जड़ स्थिति के विरुद्ध बेहतर स्थिति के निर्माण की आकांक्षा को जगाना है। साहित्यकार भी जिन सामाजिक स्थितियों में रहता है उसी का प्रतिबिम्ब (विरोध, आक्रोश, सुधार, क्रांति के रूप में) उसके साहित्य में दिखता है। निराला की कविता जैसे वह तोड़ती पत्थर (निम्न वर्ग की श्रमिक स्त्री के प्रति), रामदास (सत्ताविहीन व्यक्ति के प्रति), भिक्षुक (एक गरीब के प्रति) पाठक के मन में संवेदनशीलता को उत्पन्न करती हैं। वहीं प्रेमचंद की कहानियों (बूढ़ी काकी, ईदगाह, कफन), उपन्यास (गोदान, सेवासदन) आदि में रचनाओं में समाज की दयनीय स्थिति को बदलने की आकांशा ही व्यक्त हुई है।

- साहित्य केवल मानव चेतना की उपज नहीं ही है बल्कि वह मानव चेतना का नव निर्माण और विकास भी करता है। उदाहरण के लिए मैक्सिम गोर्की का कथा साहित्य तत्कालीन रूस में हुई क्रांति और जनसंघर्ष का जीवन्त दस्तावेज माना जाता है। इसी क्रम में समाज को बदलने में साहित्य की भूमिका को भुलाया नहीं जाना चाहिए। चूँकि साहित्य में युगीन परिस्थितियों का अंकन होता है। फ्रांस की क्रांति, रूस की क्रांति, भारत का स्वतंत्रता संग्राम सभी के पीछे साहित्य की भूमिका रही है। रूसो द्वारा दिये स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांत को मैक्सिम गोर्की की मदर, तालस्ताय की वार एंड पीस जैसी रचनाओं में देखा जा सकता है। भारतेंदु की भारत दुर्दशा, मैथिलीशरण की भारत भारती, निराला की राम की शक्ति पूजा ने तत्कालीन भारतीय जनता को ब्रिटिश सत्ता से लड़ने का सबल और स्व मूल्याकन के अवसर प्रदान किये। इस प्रकार अतीत में साहित्य की इतनी मजबूत भूमिका ने वर्तमान में साहित्य अध्ययन की आवश्यकता को और अधिक बढ़ा दिया है।

साहित्य अध्ययन की आवश्यकता

किसी भी संभ्यता के विकास की कड़ियों को हम तीन तरीकों से समझ सकते हैं– यात्रा द्वारा, दूसरा इतिहास द्वारा, तीसरा साहित्य द्वारा। साहित्य चूँकि प्रथमतः भाषा ही है इसलिए यदि हिंदी भाषा की ही बात की जाए तो हिंदी साहित्य की अपनी विशाल धरोहर है। जिसके माध्यम से हम विभिन्न साहित्यिक प्रवृतियों को, सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि को, प्रमुख रचनाकारों और उनकी रचनाओं के अंतसूत्रों को समझ सकते हैं। साहित्य के विषय में कहा जाता है कि यह इतिहास की परतों को खोलता है। इतिहास तथ्यों तक सीमित रहता है, वहीं साहित्य उनके बीच की कड़ियों को जोड़ता है। समय के साथ साहित्यिक चिंतनधारा में आये बदलावों के सम्यक बोध के साथ जीवन की स्थिति, गति और परिवर्तनों के सूक्ष्म विवेचन करने की क्षमता साहित्य अध्ययन से ही प्राप्त हो पाती है। साहित्य मानवीय जीवन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। अतः साहित्य अध्ययन के माध्यम से विघटित होते जीवन मूल्यों को पुनः स्थापित करने की संभावनाओं को खोला जा सकता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनेक भाषाओं में विपुल साहित्य उपलब्ध है। जिसके अध्ययन से हम भारतभूमि की सम्पूर्ण संस्कृति, जीवन–यापन और रहन–सहन से परिचित हो सकते है। महान साहित्यकार यू.आर. अनंतमूर्ति के अनुसार "भारत देश अपनी बाईस भाषाओं में एक ही बात बोलता है" यह वाक्य भारतीय भाषाओं और संस्कृतियों के आंतरिक एक्य को प्रतिबिम्बित करता है अर्थात् हमारा जातीय इतिहास, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्य एवं साहित्यिक संवेदना एक ही है। यह बात साहित्य अध्ययन के माध्यम से स्वयं अनुभूत की जा सकती है क्योंकि साहित्य सांस्कृतिक संदेशों का वाहक होता है इसलिए किसी भी राष्ट्र की संस्कृति को समझने के लिए उसका साहित्य एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज होता है। संस्कृत साहित्य के कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट हों या अंग्रेजी के शेक्सपियर, वर्ड्सवर्थ, कीट्स या हिंदी साहित्य का रासो साहित्य हो या तमाम भक्तिकालीन कवियों के साहित्य से लेकर आधुनिक काल के भारतेंदु, मैथिलीशरण, जयशंकर प्रसाद, निराला महादेवी, दिनकर, प्रेमचंद आदि की रचनाओं के माध्यम से उस काल की परिस्थितियों और सभ्यता से परिचित हो सकते हैं। इसी के साथ साहित्य अध्ययन से मानव समाज में संवेदनशीलता का विकास होता है। आदिकवि वाल्मीकि के मुख से फूटी काव्य पंक्तियाँ क्रौंच पक्षी के प्रति उनकी तीव्रतम संवेदनशीलता के विस्फोट का ही परिणाम था। साहित्य अध्ययन से क्रूर कर्मी की क्रूरता कम होती है, पाठक में दया, क्षमा, सहानुभूति आदि मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा होती है। साहित्य अध्ययन से मन द्रवित होता है और उदार बनता है।

एक सामान्य पाठक भी साहित्य अध्ययन से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त कर सकता हैं–

- **"साहित्य किसे माना जाए"** इसे लेकर बदलती मान्यताएं क्या रही हैं और साहित्य के नाम पर किन प्रवृतियों को समय–समय पर प्रश्रय दिया जाता रहा है और उसके क्या कारण हैं। साहित्य के विभिन्न आयाम, पक्ष और पड़ाव क्या क्या रहे हैं। अर्थात साहित्य अध्ययन से अपनी साहित्यिक जड़ों से जुड़ा जा सकता है।
- साहित्य के स्वरूप निर्धारण में तत्कालीन शासक वर्ग की भूमिका को समझा जा सकता है।

- साहित्य ने किस प्रकार सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकताओं के साथ हाथ मिलाते हुए खुद को विकसित किया है अर्थात् कैसे साहित्य के भीतर उपस्थित प्रतिरोधात्मक स्वर नवीन रचनात्मकता के सृजन बिंदु बने आदि मूलभूत प्रश्नों पर अनुचिंतन के अवसर साहित्य अध्ययन से ही प्राप्त हो पाते हैं। इस संदर्भ में आदिकाल के साहित्य से लेकर के भक्तिकाल के साहित्य को और भारतेंदु युग के साथ परवर्ती साहित्य को देखा जा सकता है।
- साहित्य अध्ययन से साहित्य की प्रमाणिकता व ऐतिहासिकता पर विश्लेषणात्मक व तार्किक दृष्टि निर्मित करने के अवसर मिलते हैं।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि सहित लेखन कौशल की विविध शैलियों से परिचय साहित्य अध्ययन से ही मिलता है।
- हिंदी साहित्य में उपस्थित रचनात्मक बोध को समझते हुए यह जानना भी साहित्य अध्ययन से संभव हो पाता है कि मनोरंजन के साधन से आगे बढ़कर साहित्य समाज को जागरूक करने का एक सशक्त माध्यम है।

यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि साहित्य के अध्ययन से जीवन में कोई अर्थ तभी पैदा हो पाता है जब साहित्य को वर्तमान सन्दर्भों से जोड़कर पढ़ाया जाये। हिंदी भाषा का विस्तृत व समृद्ध साहित्य है। हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए आवश्यक है कि हिंदी भाषा व साहित्य के प्रति रुचि को संवर्धित करने के लिए शिक्षक स्वयं अपने साहित्यिक रुझान और अपनी कुशलता को बढ़ाएं। शिक्षण के प्रति अपनी उदासीनता को समाप्त करने के लिए शिक्षण के नए नए तरीकों को खोजे और अपनाएं। सरकारों के स्तर पर भी हमें यह अवलोकन करने की आवश्यकता है कि विकास के मॉडल में साहित्य का स्थान कहाँ हैं। हमारे विकास के मॉडल में पुस्तकालय की व्यवस्था की स्थिति क्या है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साहित्य हमारी सभ्यता के मूल्यों के भण्डार घर है। साहित्य समाज को आगे बढ़ने के लिए दिशा निर्देश देता है। साहित्य का काम मात्र पत्रकार या फोटोग्राफर की तरह जस की तस समाज की तस्वीर पेश करना नहीं है बल्कि साहित्य इससे बड़ी और स्थायी भूमिका निभाता है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि जीवन साहित्य का आधार है और साहित्य की समृद्धि के बिना जीवन का सम्यक विकास असंभव है। तभी तो कहा गया है कि–

अन्धकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, नामवर, प्रेमचन्द प्रतिनिधि निबंध संकलन (2021), राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
2. आचार्य शुक्ल, रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास (2021), प्रभात प्रकाशन
3. प्रसाद, जयशंकर, कामायनी (2017), राजपाल एंड संस
4. इन्दप्रस्थ भारती दिसम्बर (2012) हिंदी अकादमी
5. आचार्य शुक्ल, रामचन्द्र, कविता क्या है, चिंतामणि (भाग 01)

❖◆❖